Dr M. Katha
Deptt of Sociology
V. S. J College,
Rajnagar.

B. A Part - III
Sociology (Hons)
Paper - V
Kinship, Marriage and Family

Question - बच्चों की देख-रेख के संदर्भ में परिवार एवं वैकल्पिक व्यवस्था पर विचार दीजिए।

Ans - पारिवारिक समस्याओं में बच्चों की देख-रेख करना एक समाजशास्त्रीय समस्या है क्योंकि आज परिवार में भावनात्मक पर्यावरण का अभाव हो गया है फलतः बच्चों में दया, स्नेह, प्रेम, त्याग और आज्ञा पालन का पाठ परिवार में नहीं मिल रही है फलतः बच्चों में हिंसा हिंसा एवं अनैतिक व्यवहार जन्म लिया है जो एक समाजशास्त्रीय समस्या है। अतएव, बच्चों की देख-रेख करना आवश्यक है।

बच्चों की देख-रेख से आशय बच्चों की देखभाल करना है। प्रथमः बच्चों को मिलने वाला सामाजिक वातावरण उनका अपना घर होता है। घर में सबसे पहले बच्चा अपना जन्म देने वाली माता के सम्पर्क में आता है फिर पिता, भाई-बहन तथा अन्य रिश्तेदारों के सम्पर्क में आता है। इसके बाद ही वैकल्पिक देखभाल की आवश्यकता पड़ती है।

बच्चे की देखभाल करने वाली क्रियाओं में भोजन तैयार करना, बच्चे को समय पर भोजन खिलाना, बच्चे को दैनिक क्रियाओं से निवृत करना, उसके कपड़े पहनाना, स्नान कराना, बच्चे की साफ-सफाई करना, मरहम लगाना, स्तनपान कराना, आराम से सुलाना, बच्चे के रोने पर तत्काल जाकर रोने का कारण जानकर उसे दूर करना। बच्चे को आराम देना आदि क्रियाएँ देख-भाल में सम्मिलित है।

बच्चों की वैकल्पिक देख-रेख की आवश्यकता - (Need for substitute care for children)

बच्चों की देख-रेख करने का प्रथम दायित्व उसके माता-पिता का है

परन्तु कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं कि जब उनकी देख-रेख करने के लिए वैकल्पिक साधन ढूँढने पड़ते हैं बच्चे की वैकल्पिक देख-रेख की आवश्यकता अग्रांकित कारणों से पड़ती है—

1. माता या पिता किसी की मृत्यु -
बच्चे के माता पिता में से किसी एक की मृत्यु हो जाने पर बच्चे के पोषण पालन का बोझ किसी एक ही व्यक्ति पर आ जाता है किसी एक अभिभावक के लिए बच्चे का पालन बहुत कठिन है. ऐसी स्थिति में घर से बाहर जाकर वैकल्पिक व्यवस्था का सहारा लेना पड़ता है।

2 एकाकी परिवार का होना -
आज अधिकांश शिक्षित पति-पत्नी बच्चे का अच्छा पालन पोषण करने के लिए अपनी परिवार को एक बच्चे तक ही सीमित रखते हैं। यदि माता-पिता काम-काजी हैं तो उन्हें घर से बाहर जाकर काम करना पड़ता है और बच्चे की देखरेख के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ती है।

3. वैवाहिक सम्बन्ध टूटना -
वर्तमान युग में वैवाहिक सम्बन्ध टूटना एक आम बात है जिससे बच्चे की देखभाल करना तथा अपने काम में अभिभावक को रहना एक समस्या बन जाता है फलतः बच्चों की देखभाल करने के लिए वैकल्पिक सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

4. परिवार के प्रतिमान में परिवर्तन -
संयुक्त परिवार के विघटन हो जाने से परिवार के सभी प्रतिमान कमजोर पड़ गये हैं पारिवारिक सम्बन्ध अब स्वार्थ पर आधारित है जिसका प्रभाव बच्चों के देखभाल पर पड़ा है फलतः बच्चों का पोषण-पालन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की आवश्यकता है

5. पारिवारिक सम्बन्धों में परिवर्तन :- परिवार में सामाजिक सम्बन्ध नहीं देखने को मिलती है फलत: बच्चे दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ आदि का भी संरक्षण प्राप्त नहीं हो पाता है।

6. पड़ोसियों के सम्बन्ध में परिवर्तन :- अब गाँव एवं नगर में पड़ोसपन का अभाव हो गया है अतएव, बच्चे को पड़ोस पर छोड़ना एक दुर्घटना का संकेत बन गया है अतएव, बच्चों की देख-रेख के लिए संस्था का सहारा लिया जाता है।

बच्चे के देखभाल के लिए निम्न विकल्प में विश्वास एवं सहयोग की आवश्यकता है :-

1. परिवार में भाई-बहन :- अभिभावक के अभाव में बच्चे का देख-रेख बड़े भाई-बहन को करना चाहिए।

2. पड़ोसी - पड़ोसी से अपनापन एवं परस्परता द्वारा बच्चों का देख-रेख करना संभव हो रहा है।

3. स्कूल - आजकल आवासीय स्कूल में बच्चों का देखरेख एवं शिक्षा का विकल्प व्यवस्था एक साथ है

4. भावात्मक नोहल : आजकल नगर एवं महानगर में बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा के लिए कई संस्थाएं काम कर रही है।

संक्षेप में, परिवार का परिवेश बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि परिवार में

बच्चों का विचार, दृष्टिकोण, आदर्श एवं मूल्यों का प्रमिट छाप पड़ता है तथा पारिवारिक समाजीकरण द्वारा ही साधक नेतृत्व एवं मानवात्मक नेतृत्व बच्चों में समाहित किया जा सकता है। इसलिए परिवार को एक सफल पाठशाला कहा गया है।